18वीं लोक सभा के अध्यक्ष पद पर आसीन होने के बाद प्रथम सम्बोधन

माननीय प्रधानमंत्री जी, केन्द्रीय मंत्री परिषद के सभी माननीय सदस्यगण, सभी दलों के नेतागण, सभी माननीय सदस्यगण;

मुझे पुन: इस महान सदन के पीठासीन अधिकारी के रूप में दायित्व निर्वहन करने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं माननीय प्रधानमंत्री जी और सभी दलों के नेताओं और माननीय संसद सदस्यों का, जिन्होंने मेरे प्रति विश्वास व्यक्त किया, उसके लिए भी मैं आपका आभारी हूँ।

18वीं लोक सभा का चुनाव दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का उत्सव था। इस उत्सव में भौगोलिक विविधताएं, प्रतिकूल मौसम आदि अन्य चुनौतियों के बावजूद जिस सक्रियता से 64 करोड़ से भी ज्यादा मतदाताओं ने भाग लिया, मैं सदन की ओर से, उनके और देश की जनता के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं निर्वाचन आयोग, जिसने निष्पक्ष, निर्विवाद एवं पारदर्शी तरीके से निर्वाचन प्रक्रिया सम्पन्न कराई, दूर-दराज के इलाकों में भी एक मत को मतदान करने के लिए उन्होंने जो प्रयास किया, इसके लिए मैं निर्वाचन आयोग को धन्यवाद देता हूँ।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में लगातार तीसरी बार एनडीए की सरकार बनी है। पिछले एक दशक में जनता की अपेक्षाएं, आशाएं और आकांक्षाएं बढ़ी हैं। इसलिए हम सबका दायित्व हो जाता है कि हम उनकी अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को प्रभावी तरीके से पूर्ण करने के लिए सामूहिक प्रयास करें।

माननीय सदस्यगण, 18वीं लोक सभा हमारे एक नए विज़न, नए संकल्प की सभा होनी चाहिए। 18वीं लोक सभा हमारे रचनात्मक चिंतन एवं नूतन विचारों की सभा होनी चाहिए, जिसमें उच्च कोटि की संसदीय परंपरा स्थापित हो, पक्ष–प्रतिपक्ष की मर्यादित सहमति–असहमति की

अभिव्यक्ति हो। देश के समक्ष ज्वलंत मुद्दों पर सार्थक चर्चा– संवाद हो और विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने की इच्छाशक्ति के साथ यह सभा काम करे।

माननीय सदस्यगण, मैं इस अवसर पर मेरे पूर्ववर्ती पीठासीन अधिकारियों को भी स्मरण करना चाहता हूं, जिन्होंने अपनी कार्यकुशलता से इस सदन की दक्षता को, इसकी मर्यादा को, इसकी परंपरा को और इसकी गरिमा को प्रतिष्ठा देने का पूरा प्रयास किया। मुझे भी पांच वर्ष पीठासीन अधिकारी के रूप में यह गौरव प्राप्त हुआ।

मैंने कोशिश की कि सभी सदस्यों को पर्याप्त समय, पर्याप्त अवसर मिले। मुझे खुशी है कि सदन की प्रोडक्टिविटी भी उच्चतम रही और संसदीय परंपराओं और परिपाटियों का भी हमने उच्च प्रतिमान स्थापित किया।

मुझे प्रसन्नता है कि इस लोक सभा में 281 माननीय सदस्य पहली बार चुनकर आए हैं। मैं सदन की ओर से उनका अभिनन्दन करता हूं। … (व्यवधान) मुझे आशा है कि निर्वाचित सदस्य सदन के नियमों, परंपराओं और परिपाटियों का गहन अध्ययन करेंगे और अपने वरिष्ठ सहयोगियों के अनुभवों का लाभ उठाकर श्रेष्ठ संसदीय परंपराओं का पालन करेंगे।

माननीय सदस्यगण, संसद के इस नए भवन में कई ऐतिहासिक कानून भी पारित हुए हैं। ऐतिहासिक निर्णय भी हुए हैं, जिनका बरसों तक हम इंतजार कर रहे थे। नारी शक्ति वंदन विधेयक पारित हुआ और उन्होंने खुद को नेतृत्व में भागीदारी देने का निर्णय किया। उसके साथ कई मुद्दों पर चर्चा हुई और कई महत्वपूर्ण विधेयक भी पारित हुए।

यह वर्ष हमारे संविधान निर्माण की यात्रा का 75वां वर्ष है। मैं, संविधान निर्माण में भूमिका निभाने वाले उन सभी मनीषियों को नमन करता हूं, जिन्होंने दलगत भावनाओं से, निजी विचारधाराओं से ऊपर उठकर प्रत्येक बिंदु पर गहन अध्ययन, विचार-विमर्श, चर्चा-संवाद करके एक ऐसा संविधान बनाया, जो आज भी हमारा मार्गदर्शक है।

मैं आप सभी से आग्रह करना चाहता हूं कि 18वीं लोक सभा में भी हम उन महान संविधान निर्माताओं को स्मरण करते हुए राष्ट्र हित में, लोक कल्याण में ऐसी नीतियां बनाएं, ऐसे कानून

बनाएं, जिनसे समाज के शोषित-पीड़ित और वंचित वर्ग का उत्थान हो सके और अंतिम व्यक्ति के जीवन में सामाजिक-आर्थिक कल्याण हो सके।

मैं इस अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं, आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिनके मार्गदर्शन में इस देश के अंदर संविधान दिवस मनाने की श्रेष्ठ परंपरा शुरू हुई। संविधान पर चर्चा हुई, डिबेट हुई और साथ ही साथ माननीय प्रधान मंत्री जी ने सभी राज्यों के पीठासीन अधिकारियों से कहा कि वे अपने-अपने राज्य में 'Know Your Constitution' ड्राइव शुरू करें, ताकि हमारी युवा पीढ़ी संविधान को जाने, संविधान को समझे और संवैधानिक कर्तव्यों और दायित्वों को निभाते हुए देश के विकास में सक्रिय योगदान दें । मेरी कोशिश रहेगी कि मैं सभी माननीय सदस्यों को पर्याप्त समय, पर्याप्त अवसर दूँ। यह संसद सभी पक्षों के विचार वाली सभा है। सभी पक्षों के विचार यहाँ पर आने चाहिए। सहमति, असहमति हमारे लोकतन्त्र की ताकत है। हम अलग-अलग विचारधाराओं से चुनकर आते हैं, लेकिन अलग-अलग विचारधाराओं के बाद भी देश सबसे सर्वोपरि है। मुझे आशा है कि अपने-अपने दल की विचारधारा और जिन मुद्दों पर असहमति होगी, आप जोर से असहमति व्यक्त करेंगे। जहाँ पर आप विधेयक पर सकारात्मक रूप से चर्चा करते समय सुझाव देंगे, मेरी सरकार से भी अपेक्षा रहेगी कि उन सुझावों को शामिल करें। पक्ष और विपक्ष, दोनों से मिलकर सदन चलता है। भारत के लोकतन्त्र की ताकत यही है कि सबकी बात सुनी जाए और सबकी सहमति से सदन चले। मेरी अपेक्षा रहेगी कि मैं सबकी सहमति से सदन चलाऊँ। एक दल का व्यक्ति हो, उसको भी पर्याप्त समय, पर्याप्त अवसर मिलेगा, क्योंकि देश की जनता ने उनको चुनकर भेजा है। मैंने पिछले कार्यकाल में कोशिश की कि पहले सत्र में सभी माननीय सदस्यों को बोलने का अवसर दिया जाए। जो माननीय सदस्य नहीं बोलना चाहते थे, उनको भी आग्रहपूर्वक बुलाया और उन्होंने अपनी बात सदन में रखी। मैं कोशिश करूँगा कि उन्हीं भावनाओं से आप सबका मत/विचार सदन में आए और मैं निष्पक्ष रूप से सदन का संचालन कर सकूँ, लेकिन मेरी अपेक्षा रहेगी कि निर्बाध रूप से सदन चले। यह मेरी आप सभी से अपेक्षा रहेगी। हम सब लोग यहाँ पर चुनकर आते हैं और जनता की बहुत अपेक्षाओं से चुनकर आते हैं। इसलिए मैं

बार-बार आग्रह करता हूँ कि सदन में गतिरोध नहीं होना चाहिए। सदन में आलोचना हो, विचार व्यक्त हों, अभिव्यक्ति हो, लेकिन गतिरोध सदन की परम्परा नहीं है। वेल में आना सदन की परम्परा नहीं है। मेरी कोशिश रहेगी कि जो संसदीय मर्यादा है, उसका पालन करने की जिम्मेदारी आपने मुझे दी है और मैं उसका पालन करूँगा। मैं कभी माननीय सदस्यों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करना चाहता। आप सब भी यह चाहते हैं कि सदन की उच्च कोटि की परम्पराएं, परिपाटियाँ लागू रहें। इसके लिए मुझे कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं। इस 18वीं लोक सभा में मेरी अपेक्षा रहेगी कि हम सब लोग बहुत अच्छा संवाद करें, उच्च कोटि का संवाद करें, चर्चा करें, जैसी इस सदन की परम्परा रही है कि यहाँ पर उच्च कोटि का संवाद, चर्चा हुई है। मेरी कोशिश रहेगी कि उसी तरीके की चर्चा/संवाद हो। संसद में विरोध और सड़क के विरोध में अन्तर होना चाहिए। हमें जनता ने संसद के लिए चुनकर भेजा है। इसलिए मेरी अपेक्षा रहेगी कि हम विरोध के तरीके को संसद की मर्यादा के अनुरूप अपनाएं।

मैं पुन: सभी माननीय सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ। मैं विशेष रूप से आग्रह करता हूँ कि लोकतन्त्र और इस सदन का गौरव बढ़ाने के लिए आप सब सामूहिक प्रयास करेंगे। हमें लोक सेवा का जो अवसर मिला है, हम उसका अधिकतम उपयोग करेंगे।

मैं 18वीं लोक सभा के इस अन्तरिम काल के सदन की कार्यवाही के सुचारू संचालन के लिए हमारे माननीय प्रोटेम स्पीकर श्री भर्तृहरि महताब जी, सभापति तालिका के सदस्य माननीय राधा मोहन सिंह जी एवं फग्गन सिंह कुलस्ते जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं लोक सभा के महासचिव और सचिवालय के सभी कर्मचारियों की समर्पित सेवा के लिए उनको धन्यवाद देता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि जो विचार आपने व्यक्त किए हैं, हम सब मिलकर इस 18वीं लोक सभा में इस सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा को बढ़ाएंगे। धन्यवाद। जय हिन्द।